पंचम अध्याय

राष्ट्रीय नवजागरण चेतना में भारतेन्दु का योगदान

पंचम अध्याय

"राष्ट्रीय नवजागरण चेतना में भारतेन्दु का योगदान"

प्रस्तावना :

सन् 1857 की प्रथम राज्य- क्रांन्ति के दमन के उपरान्त भारत में अंग्रेजों का एकछत्र साम्राज्य स्थापित हो गया था। अंग्रेज जब भारत का एक छत्र शासक बन गया, तो उसने अपने साम्राज्यविस्तार के लिए कूटनीति से भरे राजनीतिक डावपेचों के हथकण्डे को अपनाकर एक ओर तो अपने व्यापार को समृद्ध बनाने का प्रयत्न किया। दूसरी ओर यहाँ के प्राचीन इतिहास, संस्कृति, धर्म, साहित्य आदि को अपनी सभ्यता और संस्कृति से पिछड़ा हुआ बताकर अंग्रेजो ने अपनी संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना शुरू किया। इन बिकट परिस्थितीयों में अंग्रेजों का खुलकर विरोध करने का परिणाम मृत्यू को आमंत्रण देना था। इसलिए भारतेन्दु ने साहित्य के माध्यम से अंग्रेज और उसके शोषित शासन के प्रति गहरा क्षोभ, आक्रोश और घृणा की भावना व्यक्त कर लोगो में राष्ट्रीय नवजागरण चेतना भरने का प्रशंसनीय कार्य किया। साहित्यिक हिन्दी को उन्होने सवाँरा। साहित्य के साथ हिन्दी के नए आन्दोलन को जन्म दिया, हिन्दी साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय और जनवादी तत्वों को प्रतिष्ठित किया। जिसमे नवजागरण की चेतना पूरे राष्ट्र में फैली।

भारतेन्दु का योगदान :

सन् 1850 में काशी में, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के रूप में एक ऐसी महान साहित्यिक प्रतिभा का जन्म हुआ, जिसने अपनी प्रखर मेधा, अथाह कर्मशक्ति और आकर्षक व्यक्तित्व दवारा हिन्दी-साहित्य की धारा को एक नई दिशा की ओर मोड़ उसे बहुमुखी बना दिया था। बालक हरिश्चन्द्र का बचपन ऐसे ही साहित्यिक वातावरण में बीता था। वह बचपन से ही कविता लिखने लगे थे। 15 वर्ष की अवस्था में वे अपने

परिवार के साथ जगन्नाथपुरी की यात्रा पर गए और वहीं उनका परिचय बँगला-साहित्य के नए रूप से हुआ। बँगला-साहित्य के बहुमुखी विकास, नई रूप से वे बहुत प्रभावित हुए थे।उन्होंने अनुभव किया कि, हिन्दी-साहित्य इनकी तुलना में कुछ भी नही है। इसलिए उन्होंने बँगला साहित्य से प्रेरणा लेकर प्राणपण से हिन्दी-साहित्य के विकास और सम्बद्र्धन का महान कार्य किया।

भारतेन्दु-युग में हिन्दी साहित्य एक अधिक सशक्त, अधिक संगठित और अधिक सुव्यवस्थित रूप धारण कर चुका था। नई साहित्यिक-विधाओं, नवीन विषयों, नए गद्य रूपों, खड़ीबोली और ब्रजभाषा के द्वन्द्व आदि के कारण उसका रूप अपने पूर्व वर्ती रूप से भिन्न, विविध-मुखी, विस्तृत और विशाल बन, नवीन युग-चेतना को अभिव्यक्त कर रहा था। साहित्य के क्षेत्र में इस बदलाव के कारण राष्ट्रीय नवजागरण की चेतना पूरे देश में फैलाने के लिए मदद मिलीं। इस युग के साहित्य में राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने का प्रयास भारतेन्दु जी ने अपने साहित्यसृजन के द्वारा किया।

भारत पर अंग्रेजों का एकछत्र साम्राज्य स्थापित हुआ था। अपने साम्राज्य विस्तार के कार्य को सफल करने के लिए उन्होंने अंग्रेजी सभ्यता, संस्कृति और शिक्षा का प्रचार-प्रसार किया था।देश में अंग्रेजी-शिक्षा के प्रचार से एक लाभ जरूर हुआ था। अंग्रेजी के माध्यम से भारतियों को पाश्चात-साहित्य वहाँ की विचारधाराओं राजनीतिक - सामाजिक परिवर्तनों, नवीन विज्ञान, प्राचीन इतिहास आदि का परिचय प्राप्त हुआ था। उनसे प्रेरणा प्राप्त कर अनेक भारतीय विद्वानों ने इस नई स्वदेश गौरव की भावना के द्वारा राजनीतिक चेतना को निर्माण करके देश में राष्ट्रीय नवजागरण चेतना भर दीं।

हरिश्चन्द्र ने सात वर्ष की अल्पायु में ही कविता लिखना आरम्भ किया। उन्होंने अनेक सामाजिक तथा राजनीतिक विषयों पर कविताएँ लिखीं, उनके काव्य का मूल स्वर वैष्णवों का भक्ति सम्प्रदाय था। उन्हें साधारण तथा भक्ति-आन्दोलन का अन्तिम कवि माना जाता है। एक तरफ उनके प्रकृति के सूक्ष्म संवेदन, रूप, गंध, स्पर्श

पर उनकी सहज आसक्ति उन्हें हिन्दी की रोमांटिक कविता का अग्रदूत बना देती है, तो दूसरी तरफ उनकी देशभक्ति और समाज-सुधार की कविताएँ उन्हें राष्ट्रीय परम्परा के सूत्रधार के रूप में सामने लाती है। भारतेन्दु जी की कविताओं में कई पुरानी परम्पराएँ मिलती है जिससे अनेक नई परम्पराओं का जन्म होता है। यह एक बात ही उनकी बहुमुखी प्रतिभा और सहृदयता का बहुत बड़ा प्रमाण है। साहित्य की अन्य विधाओं की तरह काव्य क्षेत्र में भी यथार्थवाद को लाकर नया प्रयोग किया। वह अपनी कविताओं में मुकरीयों और चुटकीले शब्दप्रयोगों से देश की साधारण जनता का शिक्षाप्रद मनोरंजन करके उनमें राष्ट्रीय नवजागरण का बीज बोया।

भारतेन्दु का समय पत्रकारिता की दृष्टि से एक अलग सा महत्व रखता है। पराधीनता के उस समय में देश की जनता में देशभक्ति और राष्ट्रीय चेतना का नवजागरण करने में यह पत्र-पत्रकाएँ एक सशक्त साधन बन सकती थी। इसलिए उनका महत्व और उपयोगिता को जानकर भारतेन्दु इस क्षेत्र में आगे बढे थे। उन्होंने हिन्दी का सबसे पहला मासिक पत्र सन् 1867 में शुरू किया था। जिसका नाम था 'कविवचन सुधा' जो पत्रकारिता के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया था। 'कवि वचन सुधा' से लेकर 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' तक और उसके बाद 'बालाबोधिनी' और 'श्री हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' पत्रिका निकाली जो उनके विचारों के संप्रेषण का एक माध्यम बनी। इन पत्र-पत्रिकाओ में उन्होंने अंग्रेज सरकार के विरूद्ध सैंकडों लेख, कविता और टिप्पणियाँ प्रकाशित की थी। जिसके कारण अंग्रेजों ने पत्रिकाओं के प्रकाशन पर रोक लगा दी थी।

अंग्रेजों के विरोध का डट्कर मुकाबला करते हुए भी उन्होंने मासिक और साप्ताहिक निकालना बंद नहीं किया राष्ट्रीय जनजागरण की जागृति करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। भारतेन्दु द्वारा प्रकाशित होनेवाली पत्र-पत्रिकाएँ शिक्षा-प्रचार और धर्म-प्रचार तक ही सीमित रहती थी। लेकिन अंग्रेजों के जुल्मी शासन से देश के लोंगो की जो दुर्दशा हुई थी उसे अपने साहित्य के द्वारा पत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाशित करके लोगों को जागृत किया।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र उन्नीसवीं शताब्दी के एक बड़े साहित्यकार थे। उन्होंने साहित्य की सभी विधाओं से देश में राष्ट्रीय जनजागरण चेतना फैलायी, किन्तु जिस क्षेत्र में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया वह क्षेत्र है 'हिंदी नाटक' का। अपने अठारह वर्ष के साहित्यिक जीवन में उन्होंने लगभग उतने ही नाटक लिखें। यह नाटक तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक क्षेत्रों की अंग्रेजों द्वारा जो दुर्दशा की गई थी उसे बड़े ही सजगता और सशक्तता से स्पष्ट करते हैं। लोगों में अपनी सभ्यता और संस्कृति के प्रति स्नेहभाव निर्माण करके देशोद्धार के लिए उन्हें प्रेरित करते है। उन्होंने अपने सम्पूर्ण साहित्य द्वारा जीवन के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक आदि क्षेत्रों में व्याप्त विकृतियों को प्रखरता और अदम्य साहस के साथ समाज के सामने रखने का प्रयास किया है। अपने नाट्य-साहित्य में समाज की बुराइयाँ व्यंग्य और वक्रता के द्वारा दूर करने की कला को अपनाया। देश की दुर्दशा देखकर उनका करूण हृदय विव्हल हो उठता था। यह विव्हलता उनके सम्पूर्ण नाट्यसाहित्य में सुस्पष्टता से देखी जा सकती है।

हिन्दी के अनन्य भक्त के रूप में भी भारतेन्दु पहचाने जाते हैं। उनकी ऐसी अनेक कविताएँ मिलती है जिनमें अपनी मातृभूमि के प्रति असीम और अनन्य अनुराग प्रकट होता है -

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटैं न हिय को शूल।'[1]

इस काल में हिन्दी-प्रचार का कार्य भी जोरों से हुआ था। साहित्य की विविध विधाओं का निर्माण हो रहा था, परन्तु सरकारी कामकाज की भाषा उर्दू होने के कारण सामान्य जनता में हिन्दी पठन-पाठन की प्रवृत्ति मन्द थी। भारतेन्दु जैसे जागरूक

---

1. राजनाथ शर्मा - हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास - पृष्ठ - 545

साहित्यकार अपनी मातृभाषा की उन्नति के लिए सदैव प्रयत्नरत थे। उन्होंने निरन्तर सभाएँ आयोजित कर, व्याख्यानों के माध्यम से देश के लोंगो में हिन्दी भाषा के प्रति स्नेह निर्माण किया। भारतेन्दु की हिन्दी 'हरिश्चन्द्री हिन्दी' मानी जाती है। उन्होंने हिन्दी गदय को एक नया रूप प्रदान किया था। उन्होंने उर्दू-प्रधान और संस्कृत-प्रधान भाषा के मध्य एक ऐसा मार्ग निकाला जो जन-भाषा और जनजीवन के लिए सुलभ हो।

भारतेन्दु प्राचीन संस्कृति और प्राचीन इतिहास को भारतीय जनता के नवजागरण के लिए प्रेरक शक्ति बना देना चाहते थे। वह जनता में राष्ट्रीयता की भावना जगाकर अपने देश के गौरव को जगाना चाहते थे। उन्होंने जिस संस्कृति का निर्माण किया, वह जनवादी थी। धर्म, संस्कृति, साहित्य, शिष्टाचार पर पुरोहितों का वर्चस्व था। इन सभी धर्माडम्बरों, अंधश्रद्धाओं से देश के लोंगो को जागृत करने का कार्य उन्होंने किया। समाज सुधार की ओर कदम बढ़ाते हुए उन्होंने विधवा-विवाह का समर्थन किया, बाल विवाह का विरोध किया। कुलीनता, जाति-प्रथा छुआछूत आदि का जोरदार खंडन किया। लोगों के धार्मिक अन्धविश्वासों की कड़ी आलोचना की और स्त्री-शिक्षा पर बल दिया। उन्होंने जिस संस्कृति की नींव डाली, वह सारे देश के लिए थी। भारतेन्दु ने मान-अपमान और संपत्ति- विपत्ति की परवाह न करके निर्भीकता से अँग्रेजी राज्य की आलोचना की थी। उत्तर भारत में वह स्वदेशी आन्दोलन के जन्मदाता थे, वे पहले आलोचक थे जिन्हों ने निडरता से विदेशी पूँजी के शोषण के बारे में नीड़रता से अंग्रेजों के खिलाफ अपने साहित्य के माध्यम से कुछ लिखा था।

राष्ट्रीय नवजागरण की चेतना संपूर्ण देश में फैलाने के लिए भारतेन्दु जी ने उद्‌बोधनकारी कार्य किया। उनकी अपनी व्यक्तिगत इच्छाएँ देश और समाज की इच्छाओं में घुल-मिल गयी थी। उन्होंने धन का उपयोग धार्मिक उत्सव के लिए, विदेश यात्रा के लिए, हिन्दी विश्वविद्यालय स्थापना के लिए और व्यापार की उन्नति के लिए, कॉलेज खोलने के लिए किया था। शिक्षा को क्रान्तिकारी साधन बनाकर उन्होंने समाज

की उन्नति के लिए उसके प्रसार को प्रभावी समझा। मिल्टन और प्रेमचन्द जैसे महान लेखकों की परम्परा का अनुसरण करते हुए अध्यापन का प्रबोधनकारी कार्य किया था। भ्रष्ट राज्यव्यवस्था, जातिप्रथा, उच्च वर्गो की खुशामद पसंदगी आदि की अपने साहित्य के द्वारा कड़ी आलोचना की। अन्याय व अत्याचारों को सहने की अपेक्षा उनका डट्कर विरोध करने के लिए उन्होंने लोगों को प्रेरणा दी। अंग्रेज शासकों ने जिस छल बल और व्यापारिक हथकण्डों को अपनाकर देश की जो दुर्दशा करके उसकी विकास में बाधा डाली थी। उस लोगों को इन परिस्थितियों से सचेत किया।

निष्कर्ष :

भारतेन्दु जी ने अपने सम्पूर्ण साहित्य द्वारा जीवन के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षणिक आदि अनेकविध क्षेत्रों में व्याप्त विकृतियों को स्पष्ट किया है। उनका साहित्यिक क्षेत्र में प्रवेश तब हुआ था, जब जनसामान्य अनेक विषमताओं और विसंगतियो में कष्टमय जीवन बीता रहा था। उन्हें अपनी प्रगति की कोई आशा नहीं दिखाई दे रही थी। धर्म, शिक्षा और समाज में जो रूढ़िवाद, अंधविश्वास, विपन्नता, निर्धनता, भूखमरी, पराधीनता और अशिक्षा के कारण देश की संस्कृति और सभ्यता की अवहेलना हो चुकी थी। भारतेन्दु जी ने देश की इस दुर्दिनता में राष्ट्रीय नवजागरण की चेतना फैलाकर अपने अतीत के गौरव को वापस लौंटाने का प्रयत्न किया।अंग्रेज राजभक्त परिवार में जन्म लेकर भी उन्होंने अपनी मातृभूमि पर अंग्रेजो के वर्चस्व को ललकारा था।उन्होंने अपने मान-अपमान, धन-संपत्ती और अपने जीवन की परवाह किए बिना स्वतंत्रता के इस आंदोलन में साहित्यरूपी शस्त्र से अपना क्षोभ व आक्रोश व्यक्त किया है।पराधीनता के उस समय में अपनी मातृभूमी की स्वतंत्रता के लिए उन्होंने जो देशव्यापी 'राष्ट्रीय नवजागरण' फैलाने के लिए जो योगदान दिया वह अत्यंत प्रशंसनीय है।